"सरकार श्री के बाद कोई नहीं कभी नहीं"

प्यारे सुन्दरसाथ जी आपको लेख का शीर्षक पढ़कर यह लग रहा होगा कि इसका क्या तात्पर्य है तो आज के समय में उठ रही सभी बातों अर्थात भ्रान्तियों का उत्तर इस लेख के माध्यम से अपने निजी विचारों के आधार पर देने का प्रयास कर रही हूँ।

एक ओर तो सुन्दरसाथ यह स्वीकार करते है कि "सरकार श्री गए नहीं हमारे साथ हैं जब गए नहीं तो उनके बाद यह प्रश्न ही तथ्यहीन प्रतीत होता है आज हम सभी में ही कुछ सुन्दरसाथ ऐसे है जिन्हें इस प्रश्न से कोई मतलब नहीं उनके तो पहले भी सरकार थे, सरकार है और सरकार ही रहेंगे" लेकिन कुछ सुन्दरसाथ ऐसे भी है जो स्वयं तो उलझे है और दूसरों को भी उलझा रखा है।

तो आइए सुन्दरसाथ जी जरा विचार करें कि "सरकार श्री" ने हमें कितनी अनमोल न्यामतें दी जिन्हें शब्दों में वर्णित करना भी असम्भव है।

१. श्री कुलजम स्वरुप का टीका (जिसमें अर्श के सभी गुझ भेद खोल दिए)
२. श्री बीतक साहेब का टीका
३. पट दर्शन - परमधाम के नक्शे (वर्णन सहित) और निजानन्द सम्प्रदाय के साहित्य पर आधारित "संसार और मेरा भरतार" तथा "पढ़ो सोचो और समझो। आदि"

सरकार श्री के रुप में हमें तो वह सतगुरु मिले जिन्होंने रहमतों के भण्डार खोल-खोलकर इलम को सागर के रुप में लुटाया है जिस तरह स्वामी जी ने अपने बाद आने वाले सुन्दर साथ के लिए वाणी चितवन दी उसी तरह सरकार श्री ने भी हमें वाणी ही दी। सुन्दरसाथ क्या हम इन सारी न्यामतों को लेकर भी सन्तुष्ट नहीं हुए? या हम इन्हें पढ़-पढ़ कर थक गए है कि जब हमें कुछ और की आवश्यकता महसूस हो रही है सुन्दरसाथ जी यह कटु तो अवश्य लगेगा पर हम ऐसा अगला तन क्यों ढूढ़ते हैं जिसमें श्री राजी महाराज की बैठक हो।

मैंने कभी बड़े महाराजी श्री रामरतन दासजी के दर्शन नहीं किए लेकिन सभी सुन्दरसाथ व स्वयं सरकार श्री के मुख से सुना है कि शेरपुर वाले महाराजी कहते थे कि भई हमारे पास ऐसा लोहे का घोड़ा है जो कभी थकने वाला नहीं है। (सरकार श्री) अपनी बातों में वे सरकार श्री की ओर संकेत करते थे। इस प्रकार वे समझाते कि भविष्य में जागनी का कार्य, आप ही के तन से होना है। सो हुआ भी। सरकार श्री ने भी तन, मन, धन से सुन्दरसाथ की सेवा की व महाराज श्री का हुकम शिरोधार्य किया। स्वयं पूज्य महाराज श्री ने भी अपनी मेहर से उन्हें रतन बना दिया और अपना पटुका सरकार श्री के शीश पर रखा और चर्चा, वाणी करने का शुभार्शीवाद बख्शा। इस प्रकार आप महाराज श्री अपना तन छोड़ने से पूर्व जागनी का कार्य भार सरकार श्री को सौंप चुके थे। अतः उनके बाद सुन्दरसाथ की निगाहें सरकार श्री पर टिक गई। फिर क्या था, इस रतन की चमक ने सबके दिलों को खींचा तो सब सुन्दरसाथ "तेहज वाणी, अणे तेहज चर्च" से भावविभोर

Nijanand App

होने लगे। ये ही सच्चे सतगुरु की पहचान है

"सतगुरु साधो वाको कहिये जो अगम की देवे गम।
हद बेहद सबे समझावे भाने मन को भरम"।।

जिस तन में धनी की शक्ति कार्य करती है उस तन का किसी अन्य से परिचय पाने की आवश्यकता नहीं होती वह तो स्वयं उजागर हो जाता है। सूर्य निकलने पर कोई किसी से नहीं कहता कि 'ये सूर्य है'। इसी प्रकार जिस तन से वाणी, चर्चा, चितवन का प्रकाश फैले वहाँ तहकीक धनी का प्रकाश पुंज विद्यमान होता है।

सत चाहो तो शब्दा चीन्हों, सत की बड़ी ठकुराई।

तो आइये सुन्दरसाथ जी मैं अपनी बात आगे बढ़ाती हूँ। आज की स्थिति का अवलोकन करें तो हम पाते हैं कि सरकार श्री ने अपने महाराज श्री रामरतनदास की भाँति किसी विशेष तन की ओर संकेत नहीं किया जब कि उनके सामने तो कई वाणी ज्ञाता सुन्दरसाथ थे। उन्होंने तो सदैव वाणी से नाता जोड़ा, सुरता को मूलमिलावा में पहुँचाने का प्रयत्न किया सदैव सुन्दरसाथ की सेवा, वाणी मन्थन, श्री प्राणनाथ जी के स्वरुप की पहचान दी। जागनी कार्य के लिये 'जागो और जगाओ' का अभियान चलाया। क्या उन्होंने कभी ये नहीं सोचा होगा कि मेरे तन के बाद मेरा साथ कहाँ जायेगा? क्या करेगा? अवश्य सोचा होगा।

साथ चरणों में आये सो तो सही पर पीछले कारण वाणी कही।

ये सोचा और सद्मार्ग पर चलाया। जैसे स्वामी जी ने अपने तन के बाद आने वाले साथ को वाणी दी उसी प्रकार सरकार श्री ने भी अपने बाद आने वाले साथ के लिये वाणी बख्शी, कोई तन नहीं और कुछ सुन्दरसाथ स्वयं तो गफलत में पड़े ही हैं अन्य को भी भ्रान्तियों में उलझा रहे हैं और ये साबित करने पर तुले हैं कि "सूरज छिप गया है पुनः निकलेगा" नहीं, सुन्दरसाथ जी नहीं अपने हादी अपने सतगुरू, अपने सरकार श्री तो वो कायमी का सूरज है जिनकी रोशनी अखंड है, जिनका उजाला कम भी नहीं हो सकता छिपाना तो दूर की बात है।

ये जागनी का तीसरा व अन्तिम ब्रह्माण्ड है। अपने मूल तनों में उठने के लिये ब्रजरास की तरह पहले प्रेम फिर विरहा अवश्य देखना पड़ेगा। अब विरहा से प्रेम में आना होगा और मूल तन में उठना होगा। शेष रहा जागनी कार्य, वो श्री राजजी का काम है किसी एक तन विशेष का नहीं। फिर अपने सरकार श्री ने तो एक एक सुन्दरसाथ को जागनी करने योग्य बना दिया है।

"तुम सतगुरू दीपक भये कियो जो आप समान" उन्होंने तो इतने सारे दीपक प्रज्वल्लित कर दिये हैं कि सब मिल कर चौदह भवन में उजाला कर सकते है तो आईये सुन्दरसाथ जी हम सब मिल कर अपने सरकार श्री के समस्त प्रयासों को ऐसा सुन्दररूप दें कि हरेक आतम से, हरेक मुख से ये ही आवाज निकले :-

मेरे दो अनमोल रतन
राम रतन, और जागनी रतन

प्रणाम जी

शीनू कटारिया, जयपुर

Nijanand App